शोध मंथन, Impact Factor 5.463 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X,
Vol. 9, Issue 4, pp (203-211), Month: Dec. 2018

विकास प्रशासन में नौकरशाही की भूमिका

डॉ0 शिवानी
डी0ए0वी0 सेंटेनरी कालिज, फरीदाबाद, हरियाणा, भारत ।
Email : shivanitanwar1973@gmail.com

सारांश

ब्रिटेनिका विश्व शब्द कोष के अनुसार "स्थानीय शासन का अर्थ है कि पूर्ण राज्य की अपेक्षा आन्तरिक एवं लघु प्रतिबन्धित क्षेत्र में निर्णय लेने तथा उनकों करने वाली सत्ता।

एडवर्ड वीडनर के शब्दों में "विकास गतिशील है जो सदैव चलता रहता है। विकास मन की स्थिति, प्रवृत्ति और एक दशा है जो एक निश्चित लक्ष्य के बजाय एक विशिष्ट दिशा में परिवर्तन की गति है।"

हमारे देश की विद्यमान आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों में ग्रामीण विकास की अनिवार्यता निर्विवाद है। भारतीय अर्थतन्त्र की द्विधात्मक प्रादेशिक संरचना जो प्रमुखतः ओपनिवेशक काल की विरासत है।

प्रस्तावना

जॉन मोन्टगोमरी के शब्दों में, "विकास सामान्यतः परिवर्तन के ऐसे सामान्य भाग को समझा गया है जो स्थूल रूप से पूर्व निर्धारित या योजनाबद्ध एवं प्रशासनित किया गया हो या कम से कम सरकारी कार्य द्वारा प्रभावित है।"

'विकासात्मक प्रशासन' का अर्थ है कि विकास से सम्बन्धित प्रशासन यह शेष प्रशासन से इस बात में तो समानता रखता है कि यह भी उसी तरह से नियम, नीति एवं मानकों को औपचारिक रूप से आधार मानता है।

विकास प्रशासन का उदय, विकाशील देशों की राजनीतिक स्वतन्त्रता तथा लोकतान्त्रिक मूल्यों की स्थापना से जुडा हुआ है। बहुत से विचारक यह मानते हैं कि विकासशील राष्ट्रों में राजनीति तथा प्रशासन मिलकर समाज का संतुलित विकास कर सकते हैं।

विकास प्रशासन में नागरिक और प्रशासक दोनों मिलकर सहयोग से एक दूसरे पर विश्वास करते हुए अपने को बराबर की स्थिति में महसूस करते हुए कार्य करते हैं। परिवर्तनशील स्थितियों में अपने लक्ष्य निर्धारित करना एंव नये–नये कार्यो का अनुमान लगाना उनका लक्ष्य है। समाज परिवर्तनशील स्थिति के अनुरूप शासकीय संरचना का ढालना। इस तरह नौकरशाही भविष्य पर दृष्टि रखते हुए विश्लेषणात्मक रूप से विचार करती है।

वेबर के आदर्श मॉडल के लक्षण, जैसे पदसोपान, विशिष्टीकरण, प्रशिक्षण योग्यता, कानून के अनुसार कार्य, आदि विकास प्रशासन में विद्यमान नहीं होते है। विकास प्रशासन

प्रशासनिक संगठन और प्रक्रिया में नियोजित परिवर्तन और विकास की नवीन धारणाओं और उद्देश्यों को प्रभावशाली ढंग से प्राप्त करना चाहता है।

नौकरशाही जिस राजनीतिक व्यवस्था में कार्य करती हैं। उसकी उप प्रणाली कहलाती है। इसलिए राजनीतिक प्रणाली की प्रकृति नौकरशाही के व्यवहार को उचित रूप देती है। अतः विभिन्न राजनीतिक प्रणाली में नौकरशाही का व्यवहार अलग–अलग होता है।

नौकरशाही लोकतन्त्र को स्थिरता प्रदान करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विकासशील देश सामाजिक–आर्थिक विकास के जो लक्ष्य निर्धारित करते हैं, उन्हें वास्तव में, नौकरशाही ही क्रियान्वित करती है।

नौकरशाही लोकतन्त्र को स्थिरता प्रदान करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विकासशील देश सामाजिक–आर्थिक विकास के जो लक्ष्य निर्धाारित करते हैं, उन्हें वास्तव में, नौकरशाही ही क्रियान्वित करती है।

नीति–निर्धारण की प्रक्रिया शासन की केन्द्रीय प्रक्रियाओं में एक है। एपल्बी के अनुसार नीति–निर्माण ही लोक प्रशासन का सार है। किसी कार्य–प्रणाली की योजना के कार्य में नीतियों का प्रयोग महत्वपूर्ण होता है। नीतियॉ ऐसी प्रमाणिक मार्गदर्षक हैं

विकास के युग में नौकरशाही को अपनी परम्परागत सोच और कार्यप्रणाली को छोडकर नवीन भूमिका निभाने की आवश्यकता है। अब उन्हें देश के विकास में विकास प्रतिनिधि के रूप में कार्य करने की आवश्यकता है। अधिकांश कार्यक्रम जनता के कल्याण के लिए होते हैं अतः नौकरशाही को अब जनता के साथ काम करने की आवश्यकता है।

आधुनिक समय में विकास प्रशासन का किसी भी समाज के विकास के लिए अत्यन्त योगदान होता है प्रशासन के द्वारा सरकार विकास की सभी योजनाओं को प्रभावशील तरीके से लागू करना चाहती है ताकि स्थानीय क्षेत्रों में विकास की नई लहर आ जाये तथा ग्रामीण समुदाय के विकास में योगदान कर सके।

भारतवर्ष में ग्रामीण विकास का इतिहास प्राचीन है लोकतान्त्रिक व्यवस्था, लोक कल्याणकारी राज्यों के क्षेत्र में अत्यधिक वृद्धि हुई है। भारत में स्थानीय स्वायत शासन का वर्तमान ढाँचा ब्रिटिश शासन का प्रभाव दिखाई पड़ता है। ग्राम पंचायत स्थानीय प्रशासन की सबसे छोटी संस्था है। ग्राम पंचायत के कार्य नागरिक सुविधायें, समाज कल्याण के कार्य कराती है।

भारत में स्वतन्तत्रा के पश्चात भारत सरकार ने स्थानीय विकास की दिशा में काफी प्रयास किये है राजनीति निर्देशक तत्वों में स्थानीय स्वशासन को सम्मिलित किया गया है। स्थानीय विकास के सन्दर्भ में नौकरशाही की तन्त्र भूमिका महत्वपूर्ण है क्योंकि हमारी 75 प्रतिशत जनसंख्या गाँव में निवास करती है। ग्रामीण विकास द्वारा प्रशासनिक ईकाई के रूप में विकास खण्ड का निर्माण एक नवीन पहल और सराहनीय प्रशासनिक कदम है।

विकास प्रशासन में विकास कार्यक्रम बनाने और उन्हें क्रियान्वयन करने में लोगों का सहभागी होना आवश्यक होता है। विकास प्रशासन में नागरिक एवं प्रशासन दोनों मिलकर सहयोग से एक दूसरे पर विश्वास करते हुए अपने को बराबर की स्थिति में महसूस करते हुये कार्य करते है।

भारत में नौकरशाही ने सशक्त कार्यपालिका, विधायिका, दलप्रणाली और अन्य राजनैतिक संस्थाओं के विकास ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। नौकरशाही लोकतन्त्र को स्थिरता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विकासशील देश में सामाजिक, आर्थिक विकास का जो लक्ष्य निर्धारित करते है। उन्हें वास्तव में नौकरशाही क्रियान्वित करती है।

'विकास प्रशासन' की अवधारणा के प्रतिपादकों में जार्ज ग्रांट का नाम अग्रणी माना जाता है। सर्वप्रथम विकास प्रशासन का प्रयोग भारत के एक प्रशासनिक अधिकारी यू0एल0 गोस्वामी ने अपने एक लेख 'दि स्ट्रक्चर ऑफ पब्लिक ऐडमिनिस्ट्रेशन इन इण्डिया' जो सन 1955 में दि इण्डियन जर्नल ऑफ पब्लिक ऐडमिनिस्ट्रेशन में प्रकाशित किया।

भारत में आधुनिक लोकतान्त्रिक, लोक कल्याणकारी राज्यों के कार्यक्षेत्र में अत्याधिक वृद्धि हुई है। अतः यदि राज्य की केन्द्रीय या प्रान्तीय सरकारों पर सभी कार्यो का आभार हो तो वे इन कार्यो को कुशलता तथा सरलतापूर्वक सम्पन्न नहीं कर सकती है, क्योंकि न तो उनके पास पर्याप्त समय होता है और न ही उन्हें विभिन्न स्थानों व क्षेत्रों की आवश्यकताओं और विशेष परिस्थितियों का ज्ञान होता है।

तुलनात्मक लोक प्रशासन के अध्ययन का उद्देश्य विधिक सांस्कृतिक विन्यासों में प्रशासनिक प्रणालियों की कार्यप्रणाली की व्याख्या करना है फिर भी एक विकासोन्मुख प्रशासनिक प्रणाली और उसके सांस्कृतिक विन्यास के बीच परस्पर क्रिया का अध्ययन प्रचुर मात्रा में नहीं किया है।

भारतीय विकास प्रशासन में नागरिक और प्रशासक दोनों मिलकर सहयोग से एक दूसरे पर विष्वास करते हुए अपने को बराबर की स्थिति में महसूस करते हुए कार्य करते हैं। विकास की अभिव्यक्ति केवल नौकरशाही अथवा प्रशासनिक प्रक्रिया ही नहीं कर सकती, इसमें राजनीति प्रतिनिधि, हित समूह, सामाजिक संगठनों को भी सम्मिलित करना आवश्यक हो जाता है।

किसी समाज का आर्थिक विकास, विकास का एक महत्वपूर्ण अंग है। सामान्य रूप से इसका अर्थ देश की जनसंख्या के प्रति व्यक्ति आय में वृद्वि है। आर्थिक विकास में गरीबी को दूर करना, बेरोजगारी एंव आय की असमानता में कमी लाना और सामान्य जनता के आर्थिक स्तर में सुधार करना है।

साहित्य अध्ययन

नौकरशाही एवं विकास के मध्य घनिष्ठ सम्बन्ध होता है इस सम्बन्ध का विश्लेषण करने के लिए आर0वी जैन "ब्युरोक्रेटिव वेल्यू इन डवलेपमैन्ट : ए कम्पोरेटिव स्टडी ऑफ वेल्यू ओरियनटेशन ऑफ एन्ड इन डवलपमैन्ट एडं नोनडवलपमैन्ट टास्क" के अनुभाविक अध्ययन में भूमिका एवं पूर्वाग्रह का तुलनात्मक अध्ययन किया मूल्य, ओरियनटेशन एटटीक्यूट एवं भारत में

नौकरशाही के व्यवहार के बारे में विकास एवं गैर विकास कि लक्ष्यों की चर्चा की गई इस अध्ययन में मध्य प्रदेश के मोरना जिले एव पंजाब के पटियाला जिले को अध्ययन के लिये चुना गया इस अध्ययन में नौकरशाही के सामाजिककरण की प्रक्रिया का सैद्धान्तिक अध्ययन किया गया ंनौकरशाही की सरचनात्मक विशेषताएं जैसे संस्तरण, श्रम का विभाजन, नियमों का तन्त्र आदि का वर्णन किया गया।

नौकरशाही की क्षमता, विकास मद की राशि विकास कार्यों में पूर्णतयाः उपयोगिता का अध्ययन विलियम स्वेन्गर "ब्यूरोक्रेसी फेलियर और पब्लिक एक्सपेन्डिचर" के अपने अध्ययन में संयुक्त राज्य की फैडरल सरकार की तत्कालीन समय का अध्ययन किया गया। आर्थिक, राजनीतिज्ञ विज्ञान, समाज शास्त्र, लोक प्रशासन, एवं विभिन्न सम्बन्धित शाखाओं के ज्ञान का साहित्यक सर्वेक्षण किया गया।

सामाजिक समस्या एवं सामाज के विकास के मुददों पर विस्तृत विवेचना का अध्ययन हार्डिमैन मार्गट "दा सोशल डाईमेन्सन ऑफ डवलपमैन्ट : सोशल पॉलिसी एंड पलानिगं इन दा थर्ड वर्ल्ड" के अपने अध्ययन में गरीबी एवं स्वास्थ कुपोषण, निराश्रय एवं भूमि हीन विकासशील देषों में बीसवी सदी की स्थिति का अध्ययन किया। इस पुस्तक में सामाजिक समस्या एवं सामाज के विकास के मुददों पर विस्तृत विवेचना कि गई विभिन्न निति एंवं विचारधाराओं के तुलनात्मक प्रभाव का अध्ययन किया गया।

स्ट्रीटेन पाऊल पी0 "डवलपमैनट प्रेस्पेक्टिव" के अपने अध्ययन में दोनों राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय स्तर पर सरचनात्मक एवं संस्थात्मक उत्तरदायित्व की आवश्यकता पर बल दिया एवं उनकी चुनौतियों की विस्तृत विवेचना की।

सुमित्रा शर्मा "डवलेपमैन्ट स्ट्रैटजी एडं दी डवलपमैन्ट कन्टरीज" के अध्ययन में सैद्धान्तिक एवं नीतिगत आधार पर आर्थिक विकास की जटिल समस्यों को प्रस्तुत किया लेखक ने अपने विचार एवं वृद्धि का आर्थिक प्रारूप विकास के बारे में प्रस्तुत किया विभिन्न सिद्धान्तों की समालोचना एवं मार्क्स के सिद्धान्त के यूगोस्लेव अन्तःविश्लेषण के आधार पर व्याख्या की।

प्रभाकर सिंह "कम्यूनिटी डवलैपमैन्ट प्रोग्राम इन इण्डिया : ओरगेनाइजेशन वर्किग, एकीवमेन्ट" के अपने अध्ययन में सामाजिक विकास कार्यक्रम के बारे में अध्ययन किया इस पुस्तक के अन्तर्गत ग्रामीण एवं अर्द्धनगरीय लोगों पर कार्यक्रम के प्रभाव को सामान्यीकरण किया गया जिसमें उत्तर प्रदेष के प्रताप गढ़ जिले में कार्यक्रम की उपलब्धियों का अध्ययन किया गया।

पी0डब्लू0 प्रीसटन "थ्योरी ऑफ डवलैपमैन्ट" के अपने अध्ययन में तृतीय विश्व की खोज आज के दिनों में 'औद्योगीकरण की खोज के सामाजिक सिद्धान्त' आधुनिक समाज के जनक है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद लेखक ने विकास के इतिहास का अध्ययन आज से जोड़ कर देखा लेखक ने स्कूल की श्रेणी को पहचाना एवं उनके कार्यो का उल्लेख किया हेबर मास की क्रिटीकल सिद्धान्त में सामाजिक सिद्धान्त के प्रयोग होने चाहिए कि विचार धारा की तुलनात्मक की श्रेणी समालोचना एवं निर्माणता का उल्लेख किया।

एच0 जे0 डयूलेट "डवलपमैन्ट टैक्नॉलोजी" के अपने अध्ययन में तीसरे विश्व के आर्थिक समस्या की पृष्ठ भूमि की 20वीं सदी की चुनौति बताया लेखक, डच अर्थशास्त्री ने अपनी पुस्तक में बताया कि कैसे हम विकास की समस्या को तकनीकी ज्ञान से कैसे हल कर सकते है। उन्होंने दोहराया की पश्चिमी औद्योगीकरण के प्रथम चरण में श्रम का सघनीकरण कृषि की तरफ अधिक हुआ जननकीय वृद्धि कम औद्योगिक रोजगार अधिक हुआ। इस पुस्तक में कुछ बिन्दू अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

टी0 एन0 चतुर्वेदी "ट्रानफर ऑफ टैक्नालाजी अमंग डवैलपेपिग कन्टरीज : नीड फार स्ट्रेन्थिंग कोपरोशन" अपने अध्ययन में विकासशील देश से तकनीकी का विकसित देशों से तकनीकी आपात करने के साथ–साथ अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। विकासशील देशों में जैसे भारत ने पूरी साल तकनीकी आयात में साथ–साथ विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी के क्षेत्र में बहारी मदद से बहुत उन्नति की है यह देश एक ऐसे मुकाम पर पहुंच गये है जहां पर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सन्तुलित स्थानान्तरण हो सकता है। इस पुस्तक में ही नहीं बल्कि कुछ जनरल, लेख आदि में इस मुददे पर प्रकाश डाला गया है। आइन स्कोट द्वारा लिखित एक लेख प्रशासनिक नौकरशाही ने प्राथमिक रूप से नौकरशाही के कार्यो एवं ये कार्य कैसे आर्थिक वृद्धि के लिये सहायक हो सकते है।

ओ0पी0 द्विवेदी "क्राइसिस एण्ड कन्टीन्यूटीस इन डवलैपमैन्ट थ्यौरी एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन : फ्रस्ट एण्ड थर्ड वर्ड प्रेस्पेक्टिव" ने अपने लेख में विकास प्रशासन पश्चिमी सैद्धान्तिक फाऊनडेशन एवं पूर्व आग्रह के बारे में विस्तृत विवेचना कि तृतीय विश्व की विकास की समस्या का भारतीयकरण कर विचार विमर्श इस लेख में गैर परम्परागत माडलो की आवश्यकता एवं विकास के तरीको के लिए संघर्ष करके उन्हें मूल्यों को उपलब्ध कराना। भारत में आर्थिक विकास में नौकरशाही की विविध और अर्थपूर्ण भूमिका है।

पहला नौकरशाही ऐसी स्थितियों की स्थापना करने में सहायता प्रदान कर सकती है जिसमें आर्थिक विकास हो सके। ऐसी परिस्थितियों का सम्बन्ध कानून और संवैधानिक प्रतिमानों, आर्थिक जटिलताएँ और कानून व व्यवस्था से है।

दूसरा नौकरशाही नीति–निर्माण में निर्णायक भूमिका निभाती है, अतः वह आर्थिक नीति को ऐसी दशा प्रदान कर सकती है, जिससे अधिक आर्थिक विकास सम्भव हो सके।

तीसरा नौकरशाही आर्थिक कार्यक्रमों को लागू करने के लिए गतिशील और बदलने योग्य व्यूह रचना अपना सकती है। कार्यक्रमों का सफल क्रियान्वयन नौकरशाही पर निर्भर करता है।

विकासशील राज्यों के लिए जो कि स्वयं को गरीबी–बीमारी व दरिद्रता से मुक्त होकर सामान्य खुशहाली व समृद्धि करना चाहता है, के लिए प्रशासन की शासकीय नीतियों, योजनाओं, कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी पडती है।

आर्थिक–सामाजिक विकास की दिशा में पंचायतों द्वारा जो भूमिका निभाई जा रही है वह निराशाजनक नहीं है। भले ही पूर्णतया संतोषपूर्ण न हो यह एक स्वीकृत तथ्य है कि बहुत

कुछ मिट्टी की प्रकृति भूमि प्रस्ताव मानवीय संसाधनों की उत्पादकता तथा राज्य और राष्ट्रीय स्तर राजनैतिक नेतृत्व पर निर्भर करता है। इस सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि पंचायती राज संस्थाओं की बिना ग्रामीण क्षेत्र में विकास सम्भव नहीं है।

अध्ययन विवरण स्थानीय विकास में प्रशासन के बारे में उत्तरदाताओं के विचार

ग्राम पंचायत स्थानीय प्रशासन की सबसे छोटी संस्था है। एक गांव तथा कुछ छोटे–छोटे गाँवों को मिलाकर ग्राम पंचायत बनायी जाती है। ग्राम सभा सम्पूर्ण गांवों के वयस्क पुरूषों को मिलाकर बनायी जाती है। अर्थात यह ग्राम सभा ग्राम पंचायत का चुनाव करती है। ग्राम पंचायत में एक प्रधान होता है। प्रधान के अतिरिक्त कुछ पंच (सदस्य) होते है। इनकी संख्या 5–15 तक होती है।

ग्राम पंचायत तथा जिला परिषद के मध्य में स्थानीय निकाय के संगठन को विभिन्न राज्यों में भिन्न–भिन्न नामों जैसे– पंचायत समिति, क्षेत्र समिति, आंचलिक पंचायत आदि से जाना जाता है। इसके संगठन का रूप भी विभिन्न राज्यों में भिन्न–भिन्न है लेकिन फिर भी साधारणतः इसके संगठन एवं कार्यो में समानता मिलती है।

जिला परिषद का संगठन भी पंचायत समिति की तरह ही रखा गया है। इसमें सभी पंचायत समितियों के निर्वाचित अध्यक्ष जो प्रमुख होते है और कुछ सदस्य नियमानुसार प्रत्येक पंचायत समिति से चुन के आते है।

ग्रामीण विकास के सन्दर्भ में प्रशासनिक तन्त्र की भूमिका भारत में बहुत महत्वपूर्ण है। हमारी 75 प्रतिशत जनसंख्या गाँवों में निवास करती है और अधिकांश अशिक्षित है। जनता में कम जागरूकता, अज्ञानता, जन–सहभागिता की कमी, समुदायों के दबाव की और राजनीतिक दलों में प्रतिभा के कारण सारा दारोमदार नौकरशाही, प्रशासन पर आ जाता है।

आधुनिक काल से ही जिला स्तर पर जिलाधीश की स्थिति अद्वितीय है और आज भी प्रशासन और विकास की दृष्टि से उसकी भूमिका महत्वपूर्ण है। उसे प्राप्त शक्तियाँ इसका प्रमाण है। सामान्यतः जिलाधीश जिला विकास अधिकारी होता है। लेकिन पिछले कुछ वर्षो से पंचायती राज से सम्बन्धित उसके कार्यक्रम हुए हैं। फिर भी जिला ग्रामीण विकास इकाई (डी.आर.डी.यू) का अध्यक्ष होने के नाते विभागीय भूमिका तो निभाता है।

ग्रामीण विकास द्वारा प्रशासनिक इकाई के रूप में ब्लॉक का निर्माण एक नवीन पहल और सराहनीय प्रशासनिक कदम है। समस्त ग्रामीण विकास कार्यक्रम ब्लॉक विकास प्रशासन के माध्यम से बनते और लागू होते है, इसलिए इस स्तर पर प्रशासनिक मशीनरी–कृषि, पशुपालन, सहकारिता, पंचायत, ग्रामीण उद्योग, सामाजिक शिक्षा, अभियन्त्रिकी, और महिला–बाल विकास कार्यक्रम से होता है।

जागरूकता के सम्बन्ध में प्राप्त आंड़कों का विश्लेषण

- 46 प्रतिशत उत्तरदाता खण्ड विकास अधिकारी के बारे में नहीं जानते। जबकि 37 प्रतिशत उत्तरदाता विकास खण्ड अधिकारी, सहायक विकास अधिकारी, ग्राम विकास

अधिकारी को जानते है तथा 7 प्रतिशत उत्तरदाता केवल सहायक विकास अधिकारी, ग्राम विकास अधिकारी को जानते है और 10 प्रतिशत उत्तरदाता मात्र ग्राम पंचायत अधिकारी को जानने की बात करते है।

- 40 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने पदाधिकारियों के कार्यों के बारे में अपना जवाब नकारात्मक अर्थात पता नहीं में दिया। जबकि 42 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सहायक विकास अधिकारी, ग्राम विकास अधिकारी के कार्य के बारे में जानते है जबकि 15 प्रतिशत उत्तरदाता सहायक विकास अधिकारी व मुख्य विकास के कार्यों के बारे में जानते है तथा मात्र 3 प्रतिशत उत्तरदाता केवल ग्राम पंचायत अधिकारी के कार्य के बारे में जानते है।
- अधिकारियों से कार्यों के बारे में सम्पर्क के लिये पूछने पर पता चलता है कि 75 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सकारात्मक उत्तर दिया अर्थात हां में अपने जवाब दिये। जबकि 25 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नहीं में अपने उत्तर दिये है।
- अधिकारियों के कार्यों को पूर्ण करने की रूचि के बारे में पूछने पर पता चलता है कि 48 प्रतिशत उत्तरदाता हाँ में जवाब दिया तथा 52 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नहीं में अपने जवाब दिया।
- कार्यों को पूर्ण करने की समयावधि के बारें में पूछने पर पता चलता है कि 16 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने उत्तर में तुरन्त कहकर जवाब दिया। एक माह में 17 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने उत्तर दिया। एक माह से अधिक समय में 17 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने उत्तर दिया। जबकि सर्वाधिक 40 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कभी नही में अपना उत्तर दिया।
- 46 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि खण्ड विकास अधिकारी गाँव में विकास योजनाओं के बारे में जानकारी देने आते है। जबकि 54 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नकारात्मक उत्तर दिया।
- 56 प्रतिशत उत्तरदाता स्वीकार करते है कि प्रभावशीलता को जानने के लिए अधिकारीगण गाँव में आते है। जबकि 44 प्रतिशत उत्तरदाता अस्वीकार करते है।
- 66 प्रतिशत उत्तरदाता स्वीकार करते है कि गाँव का विकास हुआ। जबकि 44 प्रतिशत उत्तरदाता अस्वीकार करते है।
- 68 प्रतिशत उत्तरदाता स्वीकार करते है कि विकास सम्बन्धी समस्या को जानने के लिए अधिकारीगण गाँव में आते है। जबकि 32 प्रतिशत उत्तरदाता अस्वीकार करते है।
- 38 प्रतिशत उत्तरदाता ने भ्रष्टाचार, पक्षपात, राजनैतिक दबाव असन्तुष्टि का कारण बताया है। जबकि 08 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने पात्र व्यक्ति को लाभ नहीं मिलना बताते है व विकास कार्यो में देरी बताते है। 11 प्रतिशत उत्तरदाता शिक्षा का अभाव व सूचना का अभाव मानतें है। जबकि मात्र 5 प्रतिशत विकास केन्द्रों का ग्रामीण क्षेत्रों से दूर होने

का कारण मानते है। 17 प्रतिशत उत्तरदाता अधिकारियों के कार्यो से सन्तुष्ट है। जबकि 22 प्रतिशत उत्तरदाता पता नहीं में अपना जवाब देते है।

- 24 प्रतिशत उत्तरदाता स्थानीय विकास प्रशासन को प्रभावी बनाने के लिए भ्रष्टाचार, पक्षपात को मुख्य कारण मानते है। जबकि 18 प्रतिशत उत्तरदाता राजनैतिक दबाव, पात्र व्यक्तियों को लाभ न मिलने को मुख्य कारण मानते है। 10 प्रतिशत उत्तरदाता विकास कार्यो में देरी, जनसाधारण में शिक्षा का अभाव को मुख्य कारण मानते है। मात्र 7 प्रतिशत उत्तरदाता सूचना का अभाव का कारण मानते है। जबकि 18 प्रतिशत उत्तरदाता स्थानीय विकास से सन्तुष्ट है। किन्तु 23 प्रतिशत उत्तरदाता को स्थानीय प्रशासन को प्रभावी बनाने के कारणों पर भी अनभिज्ञता जताते है।
- 58 प्रतिशत नौकरशाही उत्तरदाता विकास योजनाओं को प्रभावी ढंग से लागू होने में 'अशिक्षा' को महत्वपूर्ण कठिनाई मानते है। जबकि 31 प्रतिशत उत्तरदाता विकास योजनाओं को प्रभावी ढंग से लागू होने में 'असहयोग' की कठिनाई मानते है। 1 प्रतिशत उत्तरदाता 'राजनैतिक हस्ताक्षेप' को विकास योजनाओं को प्रभावी ढंग से लागू होने में कठिनाई मानते है। जबकि 8 प्रतिशत उत्तरदाता विकास योजनाओं को प्रभावी ढंग से लागू होने में कोई कठिनाई नहीं बताते है।

निष्कर्ष

लेख के अध्ययन के दौरान पाया गया कि अधिकतर उत्तरदाताओं ने कार्यो को समय पर पूरा न करने तथा विकास खण्ड के अधिकारियों का ग्रामीण को नयी–नयी योजनाओं तथा विकास खण्ड के अधिकारियों का ग्रामीण को नयी–नयी योजनाओं के बारे में जानकारी न देना ग्रामीण उत्तरदाताओं की अपेक्षा के अनुरूप नहीं है तथा नौकरशाही जनसाधारण की अपेक्षा अनुरूप समय पर कार्य, कार्यो में रूचि, गाँवों में लोगों से सम्पर्क करने की आवृति आदि को लेकर उत्तरदाताओं की अपेक्षा पर हमारा नौकरशाही तन्त्र खरा नहीं उतरता है। उपरोक्त शोध कार्य के दौरान पाया गया कि ग्रामीण विकास में नौकरशाही की भूमिका जनसाधारण की अपेक्षाओं के अनुकूल नही अथवा प्रतिकूल है।

सन्दर्भ

1. अवस्थी ए.पी 2004 *"डवलपमेंट एडमिनिस्ट्रेशन"*, अनुपम प्लाजा, ब्लाक नं0 50, संजय पैलेस, आगरा।
1. दयाल ईश्वर 1969 *"आर्गेनाईजेशन एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन"*, अधिकारी प्रोग्रेसिव कोरपोरेशन पी0वी0टी0, एल0टी0डी0।
2. माथुर, कुलदीप 1974 *ब्यूरोकरेटीक रेसपोन्स टू डवलपमैण्ट रेसपोन्स टू डवलपमैण्ट ए स्टैडी ऑफ ब्लाक डवलपमैण्ट आफिसर इन राजस्थान एण्ड उ0प्र0*, दिल्ली 1974.
3. पाई पानिन्दीकर *डवलपमैण्ट एडमिनिस्टेशन इन एप्रोच इण्डियन जनरल ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन* अंक 10

4. फाडिया बी0एल0 1998 *"पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन"* साहित्य भवन पब्लिकेशन्स आगरा,
5. कटारिया सुरेन्द्र 2001 *"कम्परेटिव पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन"* एस0एम0एस0 हाइवे, जयपुर
6. अल्मोन्द और एस0 जेम्स 1960 *"दी पालिटिक्स ऑफ डवलेपिंग एरियास"* कालमै परिन्सटोन, परिन्सटोन, यूनिवर्सिटी प्रेस।
7. बारनबास डोनाल्ड सी0 1970. *"एडमिनिस्ट्रेशन, एग्रीकल्चर डवलपमैण्ट, पेल्टज इण्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन*, दिल्ली।
8. भाले राय, *सी0एन0 1972 एडमिनिस्ट्रेशन, पालिटिक्स एण्ड डवलपमैण्ट इन इण्डिया,* लालवानी पब्लिशिंग हाउस।
9. जे0ई0 कैडन 1971 *"दी डायनामिक्स ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन, गाईड लाईन्स टू करन्ट ट्रांसफोरमेशन्स इन थ्योरी एण्ड प्रक्टिस"* न्यूयार्क रहीन हीट एण्ड वीन स्टोन।
10. जान माण्टगोमरी 1966 *ए रायल इन्वीटेशन : वेरी ऐशन ऑन श्री लासीकल थीम्सः ऐपरोचस टू डवलपमैण्ट पालिटिक्स, एडनिनिस्ट्रेशन एण्ड चेंज न्यूयार्क*, मेकग्रा हिल।
11. द्विवेदी, ओ0पी0 1985 ड*वलपमैण्ट एडनिनिस्ट्रेशन इन टयूब डेट आर0पी0 जैन एक्सपेक्ट ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन डेट फोक्सस आन गर्वनमेण्ट इन फ्लूवेन्स चेन्जस टुवाईस प्रोग्रेसिव पालिटिक्स इकनोमिक्स एण्ड सोसीयल ओबजक्टीव* नई दिल्ली।
12. पानिन्दीकर पाई 1964 *डवलपमैण्ट एडनिनिस्ट्रेशन इन एप्रोच इण्डियन जर्नल ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन* अंक 10 नं0।